ब्रिटिश शासन के विरूद्ध जन प्रतिरोध

पा.सं.	अध्याय शीर्षक	कौशल	क्रियाकलाप
7	ब्रिटिश शासन के विरूद्ध जन प्रतिरोध	आत्म बोध, परानुभूति, समालोचनात्मक सोच	कबीलों से सम्बन्धित संग्रहालय का भ्रमण तथा उनकी जीवन शैली को समझना

अर्थ

अंग्रेजों द्वारा प्राकृतिक तथा मानव संसाधनों के शोषण के कारण जन प्रतिरोध उत्पन्न हुआ जिसमें मुख्यत: किसानों, जन-जातियों तथा सैनिकों ने भाग लिया। इनमें एक आत्म विश्वास था जिसने राष्ट्रीय जन जागरण को तीव्र किया।

जनविद्रोह व प्रतिरोध के कारण

- अंग्रेजी शासन की नीतियां भारतीयों के अधिकारों, प्रतिष्ठा तथा अर्थिक स्थिति की अवमानना करती थी तथा शोषण का प्रतीक थीं।
- एक के बाद एक कई विद्रोह हुए जिनका नेतृत्व अंग्रेजों द्वारा अपदस्थ शासकों, जीती गई देशी रियासतों के पूर्व अधिकारियों, ज़िमीदारों तथा पॉलिगरस (सांमतों) द्वारा किया गया ताकि वे अपनी छीनी गई भूमि तथा जगीर को पुन: प्राप्त कर सकें।
- इसी प्रकार जनजातियों ने भी विद्रोह किया क्योंकि वे नहीं चाहते थे कि व्यापारी या सूदखोर उनकी जीवनचर्या में दखल दें।
- धार्मिक रीति-रिवाजों में हस्तक्षेप भी इन प्रतिरोधों का एक अन्य कारण था। यह बगावत प्राय: इसाईयत के विरूद्ध होती थी।

जन विद्रोह व प्रतिरोध की प्रकृति

विद्रोहियों द्वारा हिंसा तथा लूटपाट जैसे दो मुख्य तरीके अपनाए जाते थे जिससे वह शोषकों के प्रति अपना विरोध प्रकट करते थे।

किसानों के विद्रोह का महत्व

- इन विद्रोहों का उद्देश्य भारत से ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकना नहीं था फिर भी इनसे भारतीयों में जागृति आई।
- उन्हें शोषकों तथा दमनकारियों के खिलाफ संगठित होने की आवश्यकता महसूस हुई।

किसानों द्वारा विद्रोह

फकीर व सन्यासी विद्रोह 1770 में बंगाल	नील विद्रोह 1859-1862 बिहार तथा बंगाल	फरायज़ी आंदोलन (1838-1848) बंगाल	वहाबी आंदोलन (1830-1860) बंगाल

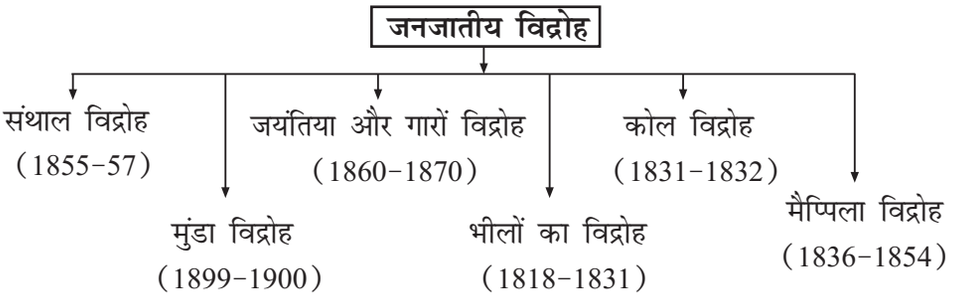

तथा अन्य कई और विद्रोह ब्रिटिश शोषण की नीतियों तथा जनजातियों के विनाश के खिलाफ उठे परन्तु इन सभी को कुचल दिया गया।

1857 का विद्रोह-कारण

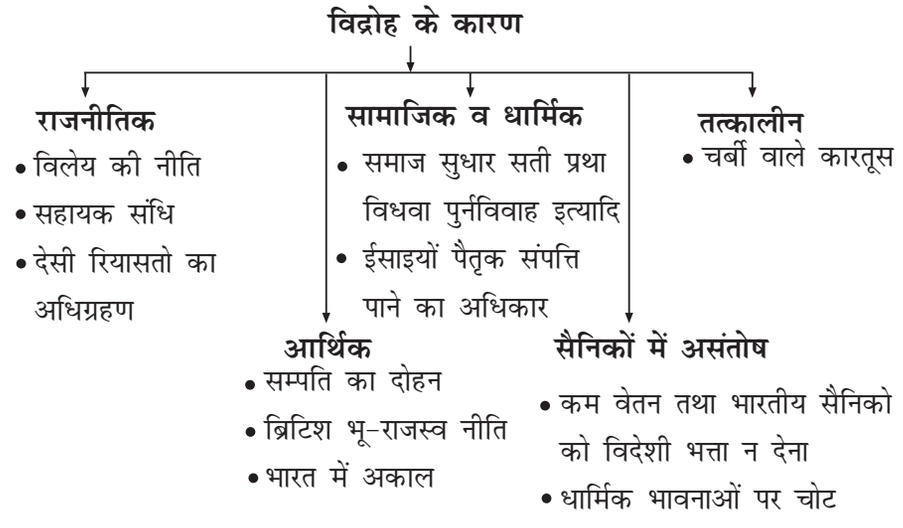

विद्रोह के चरण

- मंगल पांडे नाम का पहला सैनिक था जिसने आज्ञा का प्रत्यक्ष उल्लंघन किया
- मेरठ में घुड़सवार टुकड़ी के 85 सैनिकों को 2 से 10 वर्ष कारावास का दंड दिया गया कि क्योंकि उन्होने चर्बी वाले कारतूस के प्रयोग से इनकार किया था।
- अगले ही दिन 10 मई 1857 को तीन रेजीमेंटो ने विद्रोह कर दिया।
- उन्होने मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को भारत का सम्राट घोषित कर दिया।
- दिल्ली से यह विद्रोह अन्य जगहों जैसे कानपुर, लखनऊ, झांसी में फैल गया।

विद्रोह की प्रकृति

- 1857 के विद्रोह के बारे आज भी बहस जारी हैं। ब्रिटिश इतिहासकार 1857-58 की घटनाओं को सैनिक बगावत कहते हैं।
- किसानो तथा शिल्पियों द्वारा इसमें भाग लेने की बजह से यह लोकप्रिय तथा व्यापक बन गया।
- यह हिन्दु-मुस्लिम एकता का द्योतक बन गया।

विद्रोह की असफलता

1857 के विद्रोह की असफलता के कई कारण थे

- विद्रोहियों में उद्देश्यों के प्रति कोई एकता नहीं थी
- मध्यम व उच्च वर्गों तथा आधुनिक शिक्षित भारतीयों ने विद्रोह को सर्मथन नहीं दिया। विद्रोह का नेतृत्व कमजोर था।
- भारतीय नेताओं में संगठन व नियोजन का अभाव था।
- ऐसा कोई राष्ट्रीय नेता नहीं उभरा जो विद्रोह में तालमेल बनाता, और इसे उद्देश्य एवं दिशा देता।
- यह बंगाल प्रेसीडेन्सी तक ही सीमित था। मद्रास व बम्बई प्रेसीडेन्सी इससे अप्रभावित रहीं।

विद्रोह की विरासत

- हालांकि विद्रोहियों के प्रयास सफल न हो सके परन्तु ब्रिटिश सरकार पर दबाव पड़ा कि वह भारत के प्रति अपने नीति में बदलाव करे।
- अगस्त 1858 में ब्रिटिश साम्राज्ञी ने ईस्ट इंडिया कंपनी से भारत का नियंत्रण सीधे अपने हाथों में ले लिया तथा महारानी विक्टोरिया को भारत की साम्राज्ञी घोषित कर दिया गया।
- इससे ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन समाप्त हो गया।
- सेना में कई बड़े परिवर्तन किए गए।
- युरोपीय सेना टुकड़ियों की संख्या बढ़ायी गई तथा भारतीय सेना टुकड़ियों की संख्या 1857 से पूर्व की संख्या की तुलना में घटा दी गईं।

स्वयं का मूल्यांकन कीजिए

प्र. 1857 के विद्रोह के प्रमुख कारणों की पहचान कीजिए।

प्र. प्रारंभिक सफलता को विद्रोह क्यों नहीं बनाए रख सका?

प्र. ऐसा क्यों महसूस किया गया कि 1857 के संकट के लिए सेना जिमेदार थी?